M.A - II SEMESTER CC - VII

# अपभ्रंश साहित्य का इतिहास

## इकाई - (4) अपभ्रंश के चरित काव्य

Q-1. महावीरचरियं के कवि परिचय एवं कथावस्तु का विवेचन करें?

Ans:- महावीरचरिय के नाम दो चरित-काव्य उपलब्ध हैं। इस चरित काव्य के रचयिता चन्द्रकुल के बृहद्गच्छीय उद्योतनसूरि के प्रशिष्य और आम्रदेव सूरि के शिष्य नेमिचन्द्र-सूरि हैं। आचार्य पद प्राप्त करने के पूर्व इनका नाम देवेन्द्रगणि था। इस चरित ग्रन्थ की रचना वि०सं० 1141 में हुई है।

महावीरचरिय के कथावस्तु → आरम्भ में बताया है कि अपर विदेह में जयापुर में दानी, दयालु और धर्मात्मा एक श्रावक रहता था। वह किसी समय राजा की आज्ञा से अनेक व्यक्तियों के साथ लकड़ी लाने के लिए वन में गया। वहाँ उसने भीषण वन में लकड़ियों को काटना आरम्भ किया। भोजन के समय उसे अनेक साधुओं सहित एक आचार्य मार्ग भूल जाने के कारण इधर-उधर भटकते हुए मिले। मुनियों को देखकर वह सोचने लगा कि मेरे बड़े भाग्य हैं जिससे इन महात्माओं के दर्शन हुए। उसने उन मुनियों का अर्चन-वंदन किया और पूछा - भगवन, आप कहाँ से आये हैं और किस मार्ग से इस भयंकर वन में परिभ्रमण कर रहे हैं। आचार्य ने धर्म लाभ का आशीर्वाद दिया और बतलाया कि हमलोग भिक्षाचर्या के लिए ग्रामान्तर को जा रहे थे पर मार्ग भूल जाने से इधर आ गये हैं। अचानक आपसे भेंट

होगये। आचार्य के इन वचनों को सुनकर उस श्रावक ने उनको ग्रामान्तर में पहुंचा दिया। आचार्य से आत्म-शोधन के लिए उसने अहिंसाधर्म का उपदेश ग्रहण किया उन्होंने उपदेश में बतलाया कि जो व्यक्ति जीवन में नीति, धर्म और मर्यादा का पालन नहीं करता वह समय निकल जाने पर पश्चाताप करता है। दान, शील तप और सद्भावनाएँ व्यक्ति को वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में सभी प्रकार की सफलताएँ प्रदान करती है। वह आचार्य के इस उपदेश से बहुत प्रभावित हुआ और धर्माचरण करने लगा। फलतः आयु क्षयकर वह अयोध्या नगरी के षट्खण्डाधिपति भरत चक्रवर्ती का पुत्र उत्पन्न हुआ। भगवान ऋषभदेव के समवशरण में आगामी तीर्थंकर चक्रवर्ती और नारायण आदि के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए भरत ने पूछा - प्रभो। तीर्थंकर कौन-कौन होंगे? क्या हमारे वंश में भी कोई तीर्थंकर होंगे? इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने बतलाया - इक्ष्वाकु वंश में मारीच तीर्थंकर पद प्राप्त करेगा।

मरीच अपने सम्बन्ध में भगवान की भविष्यवाणी सुनकर प्रसन्नता से नाचने लगा। उसने अनेक मत-मतान्तरों का प्रवर्तन किया। अन्त में 26वें भव में अन्तिम तीर्थंकर महावीर नायक हुआ।

Scanned with CamScanner